विपश्यना

साधकों का मासिक प्रेरणा पत्र

बुद्धवर्ष २५४८, ज्येष्ठ पूर्णिमा, २२ जून, २००५ वर्ष ३४ अंक १३

धम्मवाणी

दुल्लभो पुरिसाजञ्ञो, न सो सब्बत्थ जायति।
यत्थ सो जायति धीरो, तं कुलं सुखमेधति॥
धम्मपद– १९३, बुद्धवग्ग

श्रेष्ठ पुरुष का जन्म दुर्लभ होता है, वह सब जगह पैदा नहीं होता। वह (उत्तम प्रज्ञा वाला) धीर (पुरुष) जहां उत्पन्न होता है उस कुल में सुख की वृद्धि होती है।

पू. गुरुजी की नेपाल यात्रा

पिछली बार पू. गुरुजी और माताजी की नेपाल यात्रा २००१ में हुयी थी। तभी से वहां के साधक उनसे नेपाल आने का आग्रह कर रहे थे। अतः पू. गुरुजी और माताजी ने इस वर्ष मई के महीने में नेपाल विपश्यना केंद्र, धर्मशृंग जाने का निर्णय किया।

पू. गुरुजी और माताजी ने ९ मई को मुम्बई से नेपाल के लिए प्रस्थान किया। मुम्बई की गर्मी से निकल कर हिमालय के शीतल प्रदेश में जाने का कार्यक्रम अचानक निश्चित हुआ। पू. गुरुजी के वहां जाने के बाद उनसे मिलने वाले बड़ी संख्या में आने लगे। दोपहर को वे उनसे मिलते और शेष समय लिखते-पढ़ते तथा चिट्ठियों का उत्तर देते।

१५ मई को महाराजाधिराज श्री ज्ञानेन्द्र वीर विक्रम शाह धर्मशृंग पर पू. गुरुजी से मिलने आये। उन दोनों की एकांत मुलाकात लगभग एक घंटे तक चली। बाद में राजा को विपश्यना केंद्र की निवासीय एवं ध्यानीय सुविधाएं दिखायी गयीं।

अन्य मिलने वालों में अधिकतर साधक थे। विपश्यना साधना तथा धर्म के परियत्ति पक्ष के बारे में उनके अपने बहुत से प्रश्न थे। पू. गुरुजी ने सबका समाधान किया। स्वाभाविक रूप से उनकी चिंता नेपाल की वर्तमान स्थिति के बारे में भी थी ही। उन लोगों ने यह कामना प्रकट की कि शीघ्र ही नेपाल में शांति स्थापित हो। पू. गुरुजी ने उन्हें सलाह दी कि वे अपने-अपने मानसिक कल्याण का खूब ख्याल रखें। हर व्यक्ति को अपने अंदर तथा बाहर की शांति प्राप्त करने के काम में लगना चाहिए। धर्म सभी के लिए है, चाहे वे किसी भी जाति या संप्रदाय के हों। धर्म वैसे लोगों के लिए भी है जिनके दार्शनिक मत तथा सामाजिक-राजनैतिक विचार भिन्न-भिन्न हों। शुद्ध धर्म लोगों को जोड़ने का काम करता है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि जो धर्म के प्रचार-प्रसार में सक्रिय हैं उन्हें राजनीतिक क्रियाकलापोंसे दूर रहना चाहिए। अपनी यात्रा के दौरान पू. गुरुजी केंद्र पर चल रहे दस-दिवसीय शिविर के साधकोंसे नहीं मिल सके थे। इस शिविर का महत्त्व विशेषरूप से तब और बढ़ गया, जब दसवें दिन पू. गुरुजी ने स्वयं उन्हें मेत्ता-भावना की साधना सिखायी।

बहुत मिलने वाले यह चाहते थे कि पू. गुरुजी का शांति और सद्भावना का संदेश अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचे। अतः उनकी इच्छा थी कि पू. गुरुजी का सार्वजनिक प्रवचन काठमांडौ शहर में हो। उम्र और स्वास्थ्य की दृष्टि से काठमांडौ जाना और आना पू. गुरुजी के लिये कठिन था। अतः यह प्रबंध किया गया कि विपश्यना केन्द्र पर ही वे अपना प्रवचन २१ मई को प्रातःकाल दें। वहां के पहाड़ी क्षेत्र में समतलभूमि अधिक नहीं थी, जहां सभी आगंतुक एक जगह बैठ सकते। फिर भी पू. गुरुजी को सुनने आये सहस्राधिक लोग तम्बू में सीढ़ियों पर, चबूतरे पर, बालकनी पर, जिन्हें जहां जगह मिली, बैठ गये। पू. गुरुजी के प्रवचन का विषय था 'विपश्यना और मानसिक शांति'। "इमेज" टी वी चैनल पर उनके प्रवचन का सीधा प्रसारण किया गया। इससे जो लोग धर्मशृंग नहीं पहुँच पाए थे, उन्होंने भी उन्हें देखा और सुना।

पू. गुरुजी ने कहा कि यह नेपाल का अहोभाग्य है कि यहां पर ऐतिहासिक बुद्ध पैदा हुए थे। गौतम बुद्ध के पूर्व के दो और बुद्धों की भी यह जन्मभूमि है। बुद्ध की शिक्षा की प्राचीन धरोहर प्राप्तकर यह भूमि पुनः सौभाग्यशालिनी हुई है। बुद्ध सर्वदा सार्वजनीन धर्म सिखाते हैं। वे ऋत के ऐसे नियमों का दर्शन करना सिखाते हैं जो सब पर समान रूप से लागू होते हैं। अगर बुद्ध की मौलिक शिक्षा नेपाल में पुनः प्रसारित हो जाय तो यह देश में शांतिमय वातावरण के निर्माण में बहुत सहायक होगी।

पू. गुरुजी के सान्निध्य में बहुत से साधक साधना करने के लिये अत्यंत उत्सुक थे। अतः बुद्ध जयंती के दिन (वैशाख पूर्णिमा के दिन बुद्ध का जन्म हुआ था, इसी दिन उन्होंने सम्बोधि प्राप्त

की थी और इसी दिन उनका महापरिनिर्वाण हुआ था।) एक-दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया।

इतनी बड़ी संख्या में लोग अपना नाम पंजीयन कराने आ रहे थे कि कार्यालय को पंजीयन का काम रोकना पड़ा। एक हजार दो सौ पचास साधक आये। प्रातः ७:३० बजे केंद्र तक आने के लिये अनेक साधकों को एक घंटे तक पैदल चलना पड़ा। ८ बजे शिविर प्रारंभ हुआ। जितने हॉल थे, जितने खाली कमरे थे तथा जितने शून्यागार थे सभी साधकों से भर गये। अथक श्रम करने वाले धर्मसेवकों तथा कुशल प्रबंधकों की सहायता से सबको बैठने की उचित जगह मिली। साथ ही अस्थायी भोजनशालाओं में भी साधकों को कोई कठिनाई नहीं हुई। सब काम समुचित रूप से संपन्न हुआ। पू. गुरुजी ने ४:३० बजे मेत्ता सत्र लिया। उस समय सभी साधक खुले आसमान के नीचे आ गये, जहां से वे पू. गुरुजी को देख और सुन सकते थे।

गंभीर आर्य मौन के साथ इतनी बड़ी संख्या में विपश्यी साधकों को देखकर पू. गुरुजी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा–

सुखो बुद्धानं उप्पादो - बुद्धों का उत्पन्न होना सुखदायी है।

सुखा सद्धम्मदेसना - सद्धर्म की देशना सुखदायी है।

सुखा संङ्घस्स सामग्गी - साधकों का एक साथ एकत्र होना सुखदायी है।

समग्गानं तपो सुखो - और उनका एक साथ तपना सुखदायी है।

–धम्मपद १९४, बुद्धवग्ग

पू. गुरुजी ने बुद्ध के जीवन की उन घटनाओं का वर्णन किया, जिनमें उन्होंने यह सिखाया है कि बुद्ध का सम्मान कैसे करना चाहिये। मां की मृत्यु के पश्चात उनका पालन-पोषण करने वाली उनकी मौसी महाप्रजापती गौतमी जब उनको प्रणाम करने आयी या उनका सम्मान करने आयी तो बुद्ध ने उनको निकट में साधना करने वाले भिक्षुओं को दिखाया और कहा कि बुद्ध के प्रति सम्मान इसी प्रकार प्रकट किया जा सकता है।

और महापरिनिर्वाण के पूर्व भी उन्होंने साधनारत दो उत्साही साधक भिक्षुओं को दिखाते हुए कहा था कि वे उनका सम्मान सच्चे अर्थ में कर रहे हैं।

२४ मई को पू. गुरुजी आचार्यों, सहायक आचार्यों तथा न्यासियों से मिले और कहा कि केंद्रों की प्रबंधन समितियां वास्तव में सेवा-समितियां हैं। उन्होंने कहा कि वे अब इसी नाम से उनका उल्लेख करेंगे। उन्होंने पुनः इस बात पर जोर दिया कि केंद्र पर काम करने वाला हर धम्मसेवक सबसे बड़े दान 'धर्मदान' का सहभागी होता है। इस प्रश्न के उत्तर में कि समाज में जो बहुत प्रकार की बीमारियां हैं उनको ठीक करने में विपश्यना की क्या भूमिका है? पू. गुरुजी ने कहा कि ,जो विपश्यना सीखता है और इसका अभ्यास करता है उसको अपने लिए तो सीधे तौर पर लाभ मिलता ही है, परंतु ऐसे लोगों को यह शक्ति प्रदान करती है जो कई प्रकार से समाज की सेवा करते हैं।

सहायक आचार्यों के प्रश्नों का उत्तर देते समय उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि धर्म के पथ पर प्रगति करने तथा अपने कर्तव्यों के निर्वहन में परियत्ति का बड़ा महत्त्व है, लेकिन साथ ही यह भी कहा कि चूंकि यह पटिपत्ति की परम्परा है, उन्हें पटिपत्ति के प्रचार-प्रसार पर अधिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए। परियत्ति महत्त्वपूर्ण है लेकिन यह पटिपत्ति ही है जो धर्म का सच्चा फल चखाती है।

नेपाल के अन्य विपश्यना केंद्रों के न्यासियों तथा धम्मसेवकों से भी वे मिले।

केंद्र के लिए अगला दिन बड़ा शुभ था क्योंकि इस दिन १८० से अधिक भिक्षु और भिक्षुणियां, जिनमें अधिकतर विपश्यी साधक थे, संघदान के लिए आमंत्रित किये गये। भोजन के बाद उन्हें एक टेंट में बुलाया गया, जहां पू. गुरुजी, माताजी तथा साधकों ने उन्हें चीवर आदि दान दिये। संघदान दे सकने के निर्णय से वायुमंडल आनन्द से भर उठा था। घर छोड़कर प्रव्रजित व्यक्ति, जो धम्म के लिये अपना पूरा जीवन अर्पित कर देता है, सम्मान और दान का पात्र है ही। विपश्यी साधक संघ के प्रति कृतज्ञता भी अनुभव करता है क्योंकि संघ ने ही सहस्राब्दियों तक धर्म के दोनों पक्षों (परियत्ति और पटिपत्ति) को सुरक्षित रखा है। संघदान बड़ा ही सुनियोजित तथा सुसंगठित था। संघदान में भाग लेने के लिए साधकों ने बहुत पहले से ही अपना नाम लिखा लिया था। कौन साधक कि सभिक्षु या भिक्षुणी को कौन-सी वस्तु दान में देगा यह पहले से निर्धारित था। इस तरह, पूर्ण व्यवस्थित ढंग से ७०० साधकों ने अपने हाथ से दान दिया। दान के बाद संघ ने पुण्यानुमोदन किया।

दूसरे दिन पू. गुरुजी के प्रस्थान के पूर्व साधक और धम्मसेवक पुनः केंद्र पर आये। उनसे मिलने के बाद पू. गुरुजी और माताजी एयरपोर्ट के लिए रवाना हुए। एयरपोर्ट के प्रतिबंधित क्षेत्र के लिए बहुत से न्यासियों तथा सहायक आचार्यों ने पास ले रखा था। इसलिए जब पू. गुरुजी अंदर लाऊंज में प्रतीक्षा कर रहे थे तो उनके सान्निध्य में इनको ध्यान करने का अवसर मिला। मुंबई के लिये प्रस्थान करने के पूर्व अल्पकालीन ध्यान सत्र के बाद उन लोगों ने पू. गुरुजी से कुछ प्रश्न पूछे। अंत में पू. गुरुजी ने पावन नेपाल देश को मंगल मैत्री दी।

यह तो धरती धर्म की, यह बुद्धों का देश।
शुद्ध धरम जागे यहां, कटें सभी के क्लेश॥
यह तो धरती धरम की, यह है पावन देश।
शुद्ध धरम जागे यहां, फैले देश विदेश॥

सबका मंगल हो!

चीन में विपश्यना

चीन में २००४ में २५ दस-दिवसीय तथा २ सतिपट्ठान शिविरों का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया। चार भिन्न-भिन्न स्थलों पर ये शिविर लगाये गये। फूजियेन प्रांत में १७ दस-दिवसीय तथा २ सतिपट्ठान, हेवेई प्रांत के बेई-डायहे (वीजिंग के निकट) छह दस-दिवसीय, तथा शिजियाझुआंग में एक तथा जिनजियांग प्रांत के उरुमक्वी में एक शिविर का आयोजन किया गया।

इसके अतिरिक्त, चीनी साधकों के एक दल ने धम्म तपोवन, इगतपुरी में दस दिवसीय शिविर में भाग लिया।

इस वर्ष न्यूयार्क चाईना न्यास ने, फूजियन प्रांत के जिगुओसी में २ सतिपट्ठान शिविर सहित, २० शिविरों की तालिका (सारणी) बनायी है। जियान शानक्सी प्रांत के चेन्दु, सिचुयान प्रान्त तथा अन्य स्थलों पर भी शिविर का आयोजन किया जा सकता है। न्यूयार्क चाईना न्यास ने अमेरिकी सरकार से ५०१-सी३ स्टेटस (पद) प्राप्त किया है, जिसमें अमेरिका के पुराने साधकों द्वारा दिये जानेवाले दान में उन्हें स्थानीय आयकर की छूट मिलेगी।

अधिक जानकारी के लिए निम्न वेबसाइट देखें- www.dhamma.org तथा एशिया और पेसिफिक शिविरों की विस्तृत जानकारी के लिए निम्न चाइनीज वेबसाइट भी देखें: www.china.dhamma.org

धम्मगिरि पर धर्मसेवा

धम्मगिरि पर इस समय लंबे-समय तक सेवा देने का सुअवसर उपलब्ध है। अगर आप कम-समय तक सेवा देना चाहते हैं तो भी आवेदन कर सकते हैं। धम्मसेवा का सुअवसर इलेक्ट्रिक्ल मेन्टेनेन्स, प्लंबिंग, पेंटिग, कारपेंटरी, गार्डनिंग, आदि क्षेत्रों में भी है। इन सेवाकार्यों में इच्छुक धर्मसेवक कृपया धम्मगिरि के पते से पत्र/फोन/ईमेल से संपर्क करें। ऐसे धम्मसेवक जो इन सेवाकार्यों में इच्छुक हैं और वे अपनी सुविधा के अनुसार हर माह केवल एक या दो दिन ही सेवा दे सकते हैं, वे भी कृपया धम्मगिरि पर संपर्क करें।

संपर्क: शिविर व्यवस्थापक, विपश्यना विश्व विद्यापीठ, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३. फोन: (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६. Email: info@giri.dhamma.org

मंगल मृत्यु

अमेरिका में बसी वरिष्ठ सहायक आचार्या डॉ. (श्रीमती) स्नेह जिंदल विगत अनेक वर्षों से विपश्यना से जुड़ी और धर्मपथ पर प्रगति एवं सेवाकार्य करते हुए बड़ा आदर्श जीवन जिया। उन्होंने निःस्वार्थ भाव से अनेक क्षेत्रों के लोगों को धर्म में पुष्ट होने में सहयोग दिया। इस पुण्यकार्य से उनकी सदगती हो, धर्मपरिवार की यही मंगल कामना है।

"आस्था" टी.वी. पर पूज्य गुरुजी के प्रवचन

'आस्था' टी.वी. चैनल पर पूज्य गुरुजी के हिंदी में प्रवचन **प्रतिदिन प्रातः ९:४५** बजे प्रसारित हो रहे हैं। साधक अपने ईष्ट-मित्रों सहित इसका लाभ ले सकते हैं। (समय बदलने पर कृपया चैनलों के दैनिक कार्यक्रम देखें।)

'आस्था' के विश्व-प्रसारण नेटवर्क के द्वारा **अमेरिका में** सोमवार से शुक्रवार तक EST समयानुसार सायं ६ बजे, चैनल नं. २००५ पर **अंग्रेजी** प्रवचन प्रसारित होगा।

"जी"-टीवी पर धारावाहिक 'ऊर्जा'

पूज्य गुरुदेव श्री सत्यनारायणजी गोयन्का के साथ की गयी प्रश्नोत्तरी **"ऊर्जा"** नामक शीर्षक से "जी" टीवी पर अब प्रतिदिन **प्रातः ४:३० बजे तथा हर सोमवार से गुरुवार तक पुनः प्रातः ७:३० बजे प्रसारित हो रही है**। इसमें पूज्य गुरुदेवजी 'धर्म' की बारीकियों को विस्तार से समझाते हैं। जिज्ञासु इसका लाभ उठा सकते हैं।

हिन्दी एवं अंग्रेजी पत्रिका वेबसाइट पर

वर्तमान और पूर्व की **हिन्दी तथा अंग्रेजी विपश्यना पत्रिका** विपश्यना विशोधन विन्यास के वेबसाइट के इन वेब-पतों पर प्राप्त कर सकते हैं:
www.vri.dhamma.org/NewslettersHindi/index.html
www.vri.dhamma.org/NewslettersHindi/oldissueshindi.html
www.vri.dhamma.org/Newsletters/index.html

Vipassana Homepages

Vipassana (introductory information):
http://www.dhamma.org — Contains information about Goenkaji, Course schedules of Vipassana Centres worldwide, Code of Discipline, Application for ten-day course, etc.
Vipassana Research Institute: http://www.vri.dhamma.org
Contains information about Indian Vipassana centres and schedule of courses, Application for ten-day course, VRI Newsletters, VRI Publications, Research papers about Vipassana, etc.
Vipassana (for old students only): http://www.dhamma.org/os
username: oldstudent; password: behappy – Contains useful information for old students of Vipassana including International Vipassana Newsletters and Reference material.
Pali Tipiṭaka Website: http://www.tipitaka.org
Contains the Chaṭṭha Saṅgāyana Tipiṭaka in Roman script alongwith commentaries, subcommentaries and related Pali texts.
Global Pagoda Website: http://www.globalpagoda.org
Contains comprehensive and updated information about the Global Pagoda with facility for online donation for this historic project.

तेलगू विपश्यना पत्रिका (मासिक): वार्षिक शुल्क रु. ५०/-. **शुल्क भेजने का पता:** विपश्यना अंतर्राष्ट्रीय साधना केंद्र, कुसुम नगर, (१२.६ कि मी.) नागार्जुन सागर रोड, हैदराबाद-५०००७०.

महत्त्वपूर्ण सूचना: (जिसने मासिक पत्रिका का शुल्क जमा नहीं किया है केवल उसी के लिए)

भावी शिविर-कार्यक्रमों की जानकारी और दैनिक साधना में प्रगति के लिए प्रेरणास्रोत 'विपश्यना' पत्रिका सभी नये साधकों को कुछ समय तक विशेष सुविधा के रूप में प्रेषित की जाती है। यदि आप चाहते हों कि यह आप को एक वर्ष तक में नियमित मिलती रहे तो कृपया इस भाग को काटकर पीछे चिपकाए पते सहित हमें लौटती डाक से वापस भिजवाएं। आप की ओर से कोई उत्तर न आने पर 'विपश्यना' के प्रति आप की अरुचि मानकर पत्रिका भेजना बंद कर देंगे। परंतु यदि आप 'विपश्यना' के प्रति रुचिवान हैं और किसी कारणवश शुल्क नहीं भेज सकते हों तब भी हम पत्रिका भेजते रहेंगे। आप चाहें तो आवश्यक शुल्क भेज कर इसके आजीवन या वार्षिक सदस्य बन सकते हैं। अतः कृपया निम्न अनुकूल बाक्स पर ✓ लगाकर सूचित करें–

❑ चाहिए ❑ अतिरिक्त प्रति/प्रतियां नहीं चाहिए ❑ रु. ५००/- (आजीवन शुल्क) या ❑ रु. ३०/- (वार्षिक शुल्क) भेज रहे हैं।

"धम्मबल" विपश्यना केंद्र

"धम्मबल" के पावन परिसर में दिनांक १९ से ३०-५-२००५ तक प्रथम शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

निर्माणाधीन "धम्मबल" में ५० X २० फुट का एक धम्महॉल तथा १० कमरों (स्नानगृह तथा शौचालय सहित) का निर्माण हो चुका है। ५ अतिरिक्त कमरों की नींव भी डाली जा चुकी है। प्रथम चरण में अभी १२ कमरे, कार्यालय तथा रसोईघर का निर्माण होना शेष है। आशा है कि यहां प्रतिमाह कमसे कम एक शिविर का आयोजन किया जा सकेगा।

साधकों के लिए असीम पुण्य अर्जित करने का सुअवसर उपलब्ध है। 'विपश्यना ट्रस्ट, जबलपुर' को ८०-जी के अंतर्गत आयकर की छूट प्राप्त है।

संपर्क : विपश्यना ट्रस्ट, जबलपुर, ३३, सिविक सेंटर, दूसरी मंजिल, दवा बाजार, जबलपुर-४८२००२, (म.प्र.) फोन: ०७६१-५००६२५२, २४१०४७४. Email: dhammabalajabalpur@yahoo.co.in

ONLINE APPLICATION FOR DHAMMA GIRI COURSES

Applications for ten-day courses at Dhamma Giri can now be made through the Internet. Applicants may fill the online form at: www.dhamma.org/schvia.shtml

आवश्यक सूचना

'७ दिवसीय किशोरों का शिविर' की **वी.सी.डी.** एवं **डी.वी.डी.** में कुछ भूलें रह गयी थी। जिन्होंने पूर्व में यह सेट बुक-स्टोर से या और कहीं से खरीदा हो, वे कृपया इसे वापस करके नया सेट ले जाने के लिए डॉ. पाठक, विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३. फोन-०२५५३-२४४०७६, २४४०८६, या Email: info@giri.dhamma.org से संपर्क करें। असुविधा के लिए खेद है।

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्यः १. श्री जी. रघुराम कुमार, हैदराबाद

बालशिविर-शिक्षक : 1. Ms. Lucie Petit, Canada

दोहे धर्म के

हत्या, चोरी झूठ से, विरत नशे से होंय।
विरत होंय व्यभिचार से, बुद्ध वंदना सोय॥
हो सम्यक आजीविका, सम्यक चिंतन होय।
रहें सजग निज सांस पर, बुद्ध वंदना सोय॥
चलते चलते धरम पथ, चित्त शुद्ध जो होय।
तो सम्यक सम्बुद्ध का, समुचित पूजन होय॥
राग द्वेष जागे नहीं, क्षीण अविद्या होय।
प्रज्ञामय समता जगे, बुद्ध वंदना सोय॥
पत्र पुष्प नैवेद्य से, छिछला वंदन होय।
अंतर जगे विपश्यना, सच्चा वंदन सोय॥
प्रज्ञा शील समाधि से, करें बुद्ध सम्मान।
यही बुद्ध की वंदना, धरें धरम का ध्यान॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा.) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई-४०० ०१८
फोनः २४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

याद करूं जद बुद्ध नै, तन मन पुलकित होय।
कि सो सुनर जग जलमियो, जन जन मंगळ होय॥
आज बुद्ध रो दिवस है, जगै बोधि री जोत।
पिंड पिंड जगमग हुवै, मिलै सांति सुख स्रोत॥
संबुध थारी बोधि रो, किसौं क मंगळ घोस।
सूत्यां नै जाग्रति मिलै, मदहोसां नै होस॥
बोधि महा महिमामयी, माटी सुवरण होय।
कांकर तो हीरा हुवै, पत्थर पारस होय॥
बुध रतन सो जगत मँह, और रतन ना कोय।
सत्य बचन रै तेज स्यूं, जय मंगळ जय होय॥
बोधि रतन जीं नै मिल्यो, सुद्ध बुद्ध है सोय।
सत्य बचन रै तेज स्यूं, बहु जन रो हित होय॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, ६९- बी रोड, सातपुर, नाशिक-४२२००७. **बुद्धवर्ष २५४८, ज्येष्ठ पूर्णिमा, २२ जून, २००५**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-,विदेश में US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. ५००/-, " US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. १९१५६/७१.** Regn. No. AR/NSK-46/2003-05

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- Licence number-- **AR/NSK-WP/3**
Posting day- Purnima of Every Month, Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६
फैक्स : (०२५५३) २४४१७६
e-mail: info@giri.dhamma.org
Website: www.vri.dhamma.org